शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -8
June
2024

समकालीन कविता में सामाजिक यथार्थबोध

डॉ. अनिल कुमार दुबे
सहा.प्राध्यापक -हिंदी विभाग
श्रीमती विद्यावती कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, झाँसी (उ.प्र)

शोध सार

समकालीन साहित्य साहित्यकार की अनुभूति की तीव्रता और परिवर्तन की उत्कट लालसा का परिणाम है जो गतिशील है और जिसकी लहरें पाठक के मन में हिलोरें उत्पन्न करती है। नयी कविता के बाद के दौर में उभरे विभिन्न काव्यांदोलनों, काव्यधाराओं और काव्य प्रवृत्तियों को ही यहाँ सुविधा के लिए समकालीन कविता कहा गया है। नयी कविता का काल प्रायः सन् 1959-60 तक माना जाता है। इस प्रकार इस इकाई में पिछले तीन दशकों की हिंदी कविता की विकास यात्रा को नए आयाम समकालीन कवियों ने दिए। इस प्रकार समकालीन कविता आधुनिक हिन्दी कविता का एक नया रूप है, जिसमें सामाजिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन, विरोध, आक्रामकता और मानवीय सरोकार अपनी स्थितियों मानवीय दशाओं का विश्लेषण और सर्जनात्मक वैचारिक तनाव का सतत् विद्यमान है। यह कविता आज की असल जिन्दगी से साक्षात्कार कराती है।

समकालीन शब्द विचारणीय है समय के निरन्तर प्रवाह में किस खण्ड को समकालीनता के दायरे में रखा जाए, और किस खण्ड को प्रकाशित किया जाए यह एक जटिल गुत्थी है। कवि अपने आस पास जो देखता है उसे अपनी कृतियों में स्वर देता है उसकी यह अभिव्यक्ति सत्य के जितने समीप होगी वह उतनी ही मर्म-स्पर्शी और कालजयी होगी।अवसाद के गहरे क्षणों में मनुष्य प्रायः अपनी मातृभाषा में सम्वाद करता है। 'कविता मनुष्यता की भाषा है।

बीज शब्द

समकालीन, स्पर्शी, अभिव्यक्ति, दृष्टिकोण, सामाजिक परिवेश।

शोध विस्तार

हिंदी साहित्य में छायावादोत्तर काल के अंतर्गत सन् 1960 ई. के बाद लिखी गई 'कविता' को समकालीन कविता की संज्ञा दी गई है। समकालीन कविता को साठोत्तरी कविता भी कहा

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -8
June
2024

जाता है। इस काल के कवियों ने अपने समकालीन परिवेश और वातावरण को सूक्ष्मता से देखा और समझा है। ये कवि समकालीन जीवन-अनुभवों के प्रति सजग एवं सचेत हैं। साधारण-जन की जीवन स्थितियों, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण समकालीन कविता में हुआ है। समकालीन कवि ने भी अपने काव्य में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है। इन्होंने अन्याय-अत्याचार, जातिगत समस्या, सांप्रदायिकता, अनुशासनहीनता, युवा आक्रोश तथा मूल्यहीन राजनीति को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाकर अपनी यथार्थबोध एवं दायित्वबोध का परिचय दिया है। डा. विश्वंभरनाथ उपाध्याय एवं डॉ. बच्चन सिंह ने समकालीन कविता पर गंभीर चिंतन किया है। विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के अनुसार- "समकालीन कविता में मनुष्य की प्रतिभा स्थिर, जड़, निष्क्रिय और दार्शनिक नहीं है। उसमें चित्रित आदमी की शक्ल है, जिससे आप यह जान सकते हैं, जबकि नई कविता के क्षणवादियों के जब-तब कौंचते क्षणांशों में निमग्न मानव-प्रतिमा को आप पूरी तरह नहीं जानते। समकालीन कविता में द्वंद्व दृष्टिकोण व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यथार्थवादी अभिव्यक्ति दर्शनीय है।"[1]

समकालीन कविता में समयानुसार जितनी सीधी और उग्र रूप में मुलाकात होती है, उतनी पूर्व की कविता में नहीं होती। पहले की कविताओं में सामान्य या शाश्वत तत्त्वों के प्रति जितना लगाव और आकर्षण था, उतना आकर्षण समकालीन कविता में नहीं है। समकालीन कविता अपने समय से सीधे जुड़ी है, जिसमें सामाजिक, राजनैतिक और जीवन स्थिति आदि पक्ष आते है। कवि व्यक्ति जीवन के सुख-दुःख के साथ-साथ समाज, प्रकृति और राजनीतिक समस्याओं के प्रति जागरूक है। उनकी काव्य रचनाएँ यार्थबोध से सम्बन्धित है। इसके आयाम बहुपक्षीय है। इस काल के कवियों में नए मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। सामाजिक यथार्थबोध समकालीन कविता की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है।इस यथार्थता के कारण कविता की प्रवृत्ति में परिवर्तन आया है। इसका प्रारंभ कवि निराला से हो गया था। निराला छायावादी कवि थे, तथापि उनकी कविताओं में भावी कविता के बीज विद्यमान है। कवि निराला ने भारतीय सामाजिक जीवन के वैषम्य और दुरावस्था की ओर दृष्टि डाली थी 'भिक्षुक', 'विधवा' आदि रचनाओं में इन्हीं भावात्मक पक्षों का उद्घाटन हुआ है। निराला जी समाज और सामाजिक जीवन के प्रति सजग थे। उनका अधिकांश काव्य सामाजिक यथार्थबोध से संबंधित है। उनकी भिक्षुक कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक ।"[2]

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -8
June
2024

निराला जी की इन कविताओं में साधारण-जन की जो अभिव्यक्ति हुई है, वह परंपरा ही समकालीन कविता तक आई है। समकालीन कविता भव्यता, प्रयोग, व्यक्तिगत निराशा- कुंठा तथा अस्वीकृति से उपजी है। नई कविता की प्रवृत्ति का विस्तार समकालीन कविता में माना जा सकता है। प्रायः नई कविता के कवि ही समकालीन कविता में उभरकर आए हैं। समकालीन कविता व्यक्ति के मोहभंग को रूपावित करती है। समाज में व्याप्त कुरीतियों, बेरोजगारी, शोषित किसान-मजदूरों की स्थिति गाँव एवं नगरो के जीवन की त्रासदी आदि आदमकालीन कविता के सरोकार है। नागार्जुन,लीलाधर जगूड़ी, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह,धूमिल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र आदि समकालीन कवियों ने समाज से जुड़े इन्हीं सरोकारों को अपनी कविताओं का मुख्य विषय बनाया है। कवि नागार्जुन की अधिकांश कविताओं में भारतीय समाज के मध्यवर्ग का चित्रण मिलता है। उन्होंने संघर्ष, शोषण, पूँजीपतियों के प्रति आक्रोश, मानवीय पीड़ा की यथार्थ अभिव्यक्ति की है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' में मानवीय पीड़ा एवं सामाजिक यथार्थ का चित्र प्रस्तुत हुआ है –

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।
कई दिनों तक काली कुतिया, सोई उनके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त।
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त ।
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद।
धुआँ उठा आँगन के ऊपर कई दिनों के बाद।"[3]

कवि गजानन माधव मुक्तिबोध युगीन परिवेश तथा परिस्थितियों से जुड़े कवि थे। उनकी कविताएँ भी मानव जीवन के यथार्थबोध से जुड़ी हुई कविताएँ हैं। उन्होंने गरीब, शोषित, संघर्ष आदि जीवन-पक्षों को व्यक्त किया है। कवि ने अपने काव्य का विषय पूँजीवादी व्यवस्था, जनक्रान्ति आदि को बनाया है। एक ओर उन्होंने साधारण जन की पीड़ा को व्यक्त किया है तथा दूसरी ओर पूंजीपतियों बुद्धिजीवियों पर व्यंग्य किया है। उनकी दृष्टि परिवेश-बोध, सामाजिक चिंतन और अनुभव-वैविध्य को विशेष बल देती है। मुक्तिबोध समाजोन्मुखी कवि हैं। वे दमनकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए सामान्य जनमानस में प्रेरणा भरते हैं। कवि ने लिखा है –

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -8
June
2024

"तोड़ने होंगे
मठाधिशों के मठ और
गड़पतियों के गड़
पहुँचना होगा उस
दुर्गम स्थानों पर।"[4]

समकालीन कविता में केदारनाथ सिंह प्रमुख कवि माने जाते हैं। उन्होंने ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश को अपने काव्य में स्थान दिया है। केदार सिंह की कविताओं में समाज के विभिन्न पक्षों यथार्थ स्वरूप देख सकता है। उन्होंने भ्रष्ट शासन व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई है। वे सामान्य जन के लिए रोटी, कपड़ा और मकान को प्राथमिक आवश्यकता मानते है। इनके बिना जीवन सम्भव नही है। वे लिखते हैं-

"लाश टुकुर-टुकुर देख रही थी,
जीवन का
एक अद्भुत उत्सव
मनाया जा रहा था
रेत पर।"[5]

कवि सुदामा पांडेय धूमिल समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर है। उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ का असली चेहरा उभरकर सामने आता है । "धूमिल की कविता विरोध की कविता है। वह यह मानकर चलते हैं कि आज सच्चाई जानने के लिए विरोध में होना आवश्यक है और सच्चाई इस समझदारी में है कि वित्तमंत्री के ऐनक का कौन-सा शीशा कितना मोटा है और विपक्ष की बेंच पर बैठे हुए नेता के भाइयों के नाम रास्ते-गल्ले की कितनी दुकानों का कोटा है।"[6]

कवि ने अपनी कविताओं में जन-सामान्य का पक्ष लिया एवं पूर्व समाज में प्रचलित पूंजीवाद पर करारा व्यंग्य किया है। वे कहते हैं कि देश के स्वतन्त्र होने पर भी पूंजीपतियों, साहूकारों, जमीदारों तथा राजनेताओं द्वारा सामान्य जनता का शोषण प्रतिदिन हो रहा है। आजादी का सही अर्थ पूछते हुए कवि धूमिल लिखते हैं-

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -8
June
2024

"क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है।
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब भी होता है।"[7]

धूमिल ने वर्तमान जनतंत्र पर करारा व्यंग्य किया है। इस जनतंत्र में रहकर साधारण व्यक्ति अपनी दो वक्त की रोटी भी चैन से नहीं खा सकता है। वह हर पल किसी-न-किसी दबाव, तनाव में जी रहा है। आज भी समाज में साधारण जन को आजादी नहीं मिली है। वर्तमान व्यवस्था में वह हर कदम पर ठोकरें ही खाता है। जो राजनेता लोक प्रतिनिधि बनकर संसद में जाते हैं, वे वहाँ जाकर लोकहित में निर्णय नहीं लेते, बल्कि पूंजीपतियों के साथ मिलकर जनता का शोषण करते हैं। इस तरह की शोषण प्रवृत्ति के विरुद्ध कवि जनता का पक्ष अपनाते हुए सीधे सीधे सवाल पूछते है-

"एक आदमी,
रोटी बेलता है,
एक आदमी रोटी खाता है।
एक तीसरा आदमी भी है,
जो न रोटी बेलता है न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है,
मैं पूछता हूँ
वह तीसरा आदमी कौन है,
मेरे देश की संसद मौन है।"[8]

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने अपने काव्य संग्रहों के माध्यम से सामाजिक तथा राजनैतिक संघर्षों को व्यक्त किया है। भूख, अन्याय, गरीबी, दुःख-सैन्य पीड़ा, संत्राषबोध आदि समाज की विषम परिस्थितियों के विरुद्ध कवि ने संघर्ष किया है। उन्होंने युग के खोखलेपन को अभिव्यक्ति दी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो उम्मीद थी वे फलीभूत नहीं हुई बल्कि अमीरी-गरीबी की खाई और बढ़ती चली गई। समाज में जो परिवर्तन आए भी, ये मात्र कागजी थे। स्वतंत्रता की वर्षगाँठ भी आम जनता के पर कतरकर मनाई जा रही है –

"पक्षियों गाओ, उदास क्यों होते हो,

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -8
June
2024

कि जबान काट ली गई है।
पंख तोड़ दिए गए हैं,
यह तो देखो कि तुम्हारा और
तुम्हारे घर का रंग कितना निखरा है।"[9]

इसी प्रकार कवि दुष्यंत कुमार ने परिवेश की विभीषिकाओं और उथल-पुथल भरे समाज में हो रहे मूल्यों के ह्रास को जीवंत रूप में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने वर्तमान के महानगरीय परिवेश में कुंठित व्यक्ति का चित्र उकेरा है, जो आज की व्यवस्था का विरोध करने के लिए तत्पर है। कवि ने लिखा है-

"जिस भाषा में,
मिला मुझे यह प्रश्न भयंकर,
मुझे इसी भाषा में,
देना होगा उत्तर।"[10]

साहित्यकार एक सामाजिक प्राणी है। वह सामाजिक विचारों तथा भावनाओं का सृष् और प्रेरक है। समाज के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद आदि भावगत विचारों से ही साहित्य सृजन किया जाता है। साहित्य जहाँ एक ओर समाज की गतिविधियों से प्रभावित रहता है। वहीं दूसरी ओर समाज में नई प्रेरणा, नए विचार, नए आदर्शों का विस्तार करता है।

भवानीप्रसाद मिश्रा अपने युग के प्रति सतत जागरूक थे वे समाज के सजग प्रहरी एवं सचेष्ट कलाकार होने के नाते उसके यथार्थ चित्र खींचे है।उनका संपूर्ण काव्य सामाजिक धरातल से परिपूर्ण है। वे जनमानस के कवि है, उन्होंने समाज में जो देखा तथा अनुभव किया वैसा ही चित्र उन्होंने अपने काव्य में चित्रित किया है।कालजयी काव्य की कथा में कवि ने प्रेम,करुणा और सहानुभूति आदि मानवीय मूल्यों को नए अर्थ में प्रस्तुत किया है। भारतीय इतिहास में अशोक का व्यक्तित्व क्रूरता एवं करुणा का एक विचित्र मेल रहा है। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक के आत्मकष्ट से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध धर्म को अपनाता है। तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियाँ अशोक को झकझोरती है और उसके ह्रदय को बदल देती है। कवि ने अशोक के बदलते स्वरूप को प्रस्तुत करते हुएलिखा है-

"दे शस्त्र नहीं, से बढ़े स्नेह,
सागर को लौंधा आर-पार,
ना घुड़सवार या रथी नहीं,
पादातिक थे उनके विचार!"[11]

रघुवीर सहाय की कविताओं का केंद्रीय विषय समकालीन मानव-जीवन है। उनके काव्य में मानवीय सहानुभूति का स्वर विद्यमान है। उनके काव्य संग्रह 'आत्महत्या के विरुद्ध' में संकलित कविताएँ लोकतंत्रीय मृत्यु भीड़ में,मैकु और में आदि राजनीतिक विडंबनाओं को वाणी देती है। लीलाधर जगूड़ी न मनुष्य और समाज को आधार बनाकर कविताएँ लिखी हैं। मानव-जीवन की विषम परिस्थितियों का यथार्थ अंकन अपनी कविताओं में किया है। उनकी कविताओं में किसान-मजदूर, निम्नवर्ग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कवि ने सामान्य जन-जीवन की विपन्न अवस्था उसकी सामाजिक विपन्नता को बखुबी सामझा है। जगूड़ी आक्रोश एवं तनाव को अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं। वे मानव तनाव को समझते हैं तथा सामाजिक विसंगतियों को बदलने का प्रयास करते हैं। इनकी कविताओं में सामाजिक वयार्थबोध विद्यमान है-

"मेरे दिमाग पर सवार यह वह,
आदमी नहीं है।
जिसने तुम्हें आजादी के बाद का चकमारिया,
और नक्शा बदलने का महकमा दिया।"[12]

समकालीन कवि चंद्रकांत देवताले की कविताओं में सिर्फ सामाजिक विसंगतियों, अत्याचारों, भ्रष्टाचार का ही वर्णन नहीं बल्कि एक उज्ज्वल सुखदायी शक्तिमय भविष्य की आस व चमक भी है।

"थककर उसने बेटी को खत लिखा,
दिन के उजाले में भी,
थोड़े से और उजाले की प्रतीक्षा है मनुष्यों को,
इसी उजाले के बिना कैद है बच्चों तक की खुशी,
कसी हूँ अब तक घोड़ों की नालद में ।"[13]

कवि शैलेन्द्र सत्ता के हुक्मनराओं की इसी वृत्ति का उल्लेख करते है -

"बैठ गए है काले पर गोरे जुल्मों के गादी है,
वही रीति है, वही नीति है, गोरे सत्यानाशी की।"[14]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि समकालीन कविताएं समकालीन भाव बोध की दृष्टि से प्रसंशनीय है।समकालीन कविता में विभिन्न पक्षों का महत्त्व

रहा है। इन कवियों ने सामाजिक विषमता-विपन्नता का यथार्थ चित्रण किया है। आज की समकालीन कविता वर्तमान के सामाजिक यथार्थ को स्पर्श करती हैं। साहित्यकार की संवेदनाएं व्यापक होती हैं। देश, समाज और जीवन में घटित होने वाली घटनाएँ समकालीनता का पोषण करती है। समकालीन कविता ने समाज के प्रति अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाते समाज को जाग्रत कर, उसका उचित मार्ग प्रशस्त करने का अतुलनीय कार्य किया है।

इस शोध आलेख के माध्यम से अन्त में यही कहना चाहूँगी कि अराजकता के इस वातावरण में निश्चय ही कवि एवं कलाकारों का दायित्व बहुत बढ़ जाता है क्योंकि अगर आप यथार्थ में शरीक नहीं होते या उसे प्रभावित नहीं करते तो यथार्थ आपको ध्वस्त कर देगा, यह बात जीवन की तरह कविता के बारे में भी सच है -

"वे नही कहेंगे कि वह समय अंधकार का था,
वे पूछेंगे कि उस समय के कवि चुप क्यों थे।"[15]

संदर्भ सूची

1. समकालीन कविता अन्तर्यात्रा/डॉ.विशम्भरनाथ उपाध्याय / पृष्ठ संख्या 1
2. अपरा (भिक्षुक,कविता)/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला /पृ. 66
3. युगधारा / नागार्जुन /पृष्ठ संख्या10
4. अंधेरे में / गजानन माधव मुक्तिबोध / पृष्ठ संख्या 36
5. अकाल में सारस (कविता)/ केदारनाथ सिंह/ पृष्ठ संख्या 41
6. आधुनिक साहित्य चिन्तन /डॉ.मैथिलीशरण प्रसाद भारद्वाज/ पृष्ठ संख्या 190
7. कविता का जनतन्त्र / धूमिल /पृष्ठ संख्या 12
8. कल सुनना मुझे / धूमिल / पृष्ठ संख्या 33
9. खूंटियों पर टंगे लोग / सर्वेश्वर दयाल सक्सेना / पृष्ठ संख्या 48
10. एक कंठ विषपायी (दृश्य-3) / दुष्यन्त कुमार / पृष्ठ संख्या 74
11. कालजयी (बीज सर्ग) / भवानी प्रसाद मिश्र / पृष्ठ संख्या 14
12. नाटक जारी है / लीलाधर जगूड़ी / पृष्ठ संख्या 26
13. भूखण्ड तप रहा है(कविता)/चन्द्रकांत देवताले / पृष्ठ संख्या 34
14. पन्द्रह अगस्त के बाद (कविता) / शैलेन्द्र / पृष्ठ 43
15. आधुनिक हिन्दी कविता / लोकभारती प्रकाशन / पृष्ठ संख्या 44